

मह्यं वासिका

ॐ नमो धीवरु स त्वाय ध्यायनि यश्च त्रविम च्छा वलाह मिह त्रात्म उ ॥ यथ स स्वयं कृमा
थं गहनय यत्राथमदि लोस स असा ॥ १ ॥ यश्च नैष टयश्च भिका दयका रु
॥ ० ॥ अमिदिल ग्मादिव काश्च कृद्वि मध्यय वासा रुमयानि वृत्ति ॥ वायं गदं य
विलम्ब कास्त्रा गदं यविष्ट दिव कय वासी ॥ ० ॥ यश्च लम्ब च नरु गोः क्षुरगु दया
दृष्टि रुत्रा दं ग्मा रुत्रां गु थय न नञा सिय ॥ द्विसा ला वल ग्मा रुत्रा सा थय रुद ल
यं ग्मा ला च्छि नं नान नञा सिय ॥ थि त्रल य रुत्रा सा थम सं या गु सिय ॥ क्षुरगु दया
दृष्टि रुत्रा सा क्षुर रु ल लाय ॥ कृत्रगु दया दृष्टि रुत्रा सा ॥ जे क्षुर रु ल सिय ॥ मिथुग
दया दृष्टि रुत्रा सा मिथु रु व सिय ॥ क्षुरगु दया दृष्टि रुत्रा सा मे थ रु ल सिय ॥ य

12915622)

लाक्ष सा सा व लास उ ध्यात्रया नि न रु ना ॥ सु य रु त्रं गा व रु ध म रु ग रु द
 नं रु ग रु द नं य न स नां व ला ला सि रु त्र सां न नां अ अ सि य ॥ य त्र त्रा सि रु त्र सा
 न त्रि सि ध यि अ सि य रु गो ॥ कु त्र ग रु द द धि रु न सां यान सां म हिं गु रु ल वि य
 सि य ॥ स क म अ द क्ष म अ न नि वृ द्धि सि य ॥ सु य ६ ४ य यानि दान स क म स यान सां
 रु रु ल सि य ॥ क ल ग रु द न ख न सा वि य लि ग रु त्र ॥ स क म अ द क्ष म अ व त्र ला सि
 रु त्र सा अ य स क नि यि अ थो त्र त्रा सि रु त्र सा व रु स रु व ॥ व त्र थो त्र दि स ना अ थो
 त्र यो दि न म ध्यं य त्र थ य यो नि न सि य रु गो ॥ २ ॥ या या स वा मा मि रु रु व ना
 वा मा म्य ना र्थां न स्या मि रु दि ॥ या यो त्र वं त स्य ला व स्य दानि न रु रु म्य व रु तां

(विद्या)

मन

पु. ३४३४

ला को पुजा मा वलवा ॥ १ ॥ ० ॥ ॥ क्षात्रालय पर्युषुमात्र गुरुयः विस्मय
 हस्यमिनः सुकृत्स्न नि अरु प्रा मंगु रु प्रसी न ना र्ध प्रयु अ व र्ज ने न सी ले नारु दय
 विसेष सु र ग र व ल व रु रु प्रसा ॥ ५ ॥ ॥ सांख्य विलय यदि वा नि का ल सां भि
 न य धु नि धा यु वि का ॥ य र्वां ध क स्य वे क प्रा मि डि र्वं मूर्त य र्वां धा य ग न ४ य र्वां धा
 ॥ ० ॥ ॥ सां भि स्य र ग न ग र ह या रु ल अ ग र ह या थ अ २ स ड ग थ अ २ न र्वां स थ अ २
 ड का न थ डं थ अ २ सा मि ग र आ नि अ रु प्रा थ व रु नि ड थ सि य धा यु वि का
 य र्वां स अ अ प्र डि व वि का अ य प्र २ व प्र सा ल वि का ॥ ५ ॥ ॥ धा यु म प्र डी व

(ध्याउपदे)

मिलाऊ साय (गावि) आ दूत दे वसु। न यल ग्रथा ॥ ४ ॥ लवकु माग ल व स क या
विष्णु न गस्य रुदं ॥ ० ॥ ध्याउ नासि ॥ १ ॥ २ ॥ ६ ॥ गुरु जंगम त्रिआदि
य धन लय डी ल धाउ पु सु सिय ॥ म ल ना नि ॥ ० ॥ ३ ॥ १० ॥ ११ ॥ गुरु व
ध न निष्प त्र ध न ल गुरु ले म ल य सु सिय ॥ जी व ना नि ॥ २ ॥ ९ ॥ ११ ॥
२ ॥ १२ ॥ गुरु उरु मा लु क व सति ध न ल गुरु वि रु न जी व पु षि श
वि स्य ष त ल ना नि ल गुरु ल सा यु द ही न का आ सिय ॥ धी त ल गुरु त सा लु क
न का आ सिय ॥ द्वि स रा अ त्र गुरु सा म मा म या क न का सिय रु थो ॥ १
० ॥ गाय थ मा इ ध्या य ॥ ॥ ॥ ॥ य स मि य य थि क य ट ॥ द्वि स न ग मा

(गो ग या नं १०)

गम धा न म्भु न या पि रु न म्भु न्ना नि न या वि रु व ॥ ० ॥ २ ॥ १२ ॥ २
॥ ११ ॥ ध न ल गुरु य रु ल सा त्र ग म ना आ सिय व म्भु न्ना नि गुरु म्भु न्ना नि
गुरु य डी म ल य डी स ता स वा य रु स ध म ल डी ॥ १६ ॥ न द्वि य वि न ड
व प्र द्वि न त्री प्र मि ठि न रु लं त व मि णि ल गुरु व क य रु न रु य ॥ ॥ ॥ न म
न नि न ॥ ० ॥ १ ॥ ९ ॥ ११ ॥ १० ॥ ध न त्र ग य ॥ ध न य ध न रु ल सा सि न
या वि यो त्रि न रु न ॥ नं गुरु य डी नं गुरु य नं ड य डी गुरु व न न वि च ल रु थो
॥ त्र ग या य न सा त्र ग म्भु नि न य या य न सा न य रु डी सिय ॥ २ ॥ द्वि स त्री त्र य

वैष्णव
विष्णु
विष्णु
विष्णु

॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ १ ॥ १० ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
लघुत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
कदाचिन्मन्त्रं धनत्रयसु ॥ १२ ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
दागमं निधेयं धनत्रयसु ॥ ० ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ धनत्रयसु ॥
सुचन्द्रमा धनत्रयसु ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ धनत्रयसु ॥
धनत्रयसु ॥ १३ ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥

॥ अत्रिष्टदासु ॥ धनत्रयसु ॥ ० ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
सुचन्द्रमा धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
लघुत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
त्रयसु ॥ ० ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
अत्रिष्टदासु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
गहनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ १४ ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥
कदाचिन्मन्त्रं धनत्रयसु ॥ १५ ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥ धनत्रयसु ॥

वैशान्वेयश्च भिन्नगमागमा नैव वदवयुर्द्वय ॥ गिर्यं च स्रष्टुनिकसंगमायथा
यत्र बुद्ध्या विनिवर्तमानाय ॥ ० ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ ११ ॥ थनयध्वलमरुलरुह
स्य गिहानि ध्वननवनिडाशुत्रा मरुमडं ॥ लग्नया केन रगीय र्यं चम स्रष्टुम
थनस स्रनित्रुद आदित्यन धनिध्वनया पसंरुका चदधाय थथयध्वल
गुरुसा मरुडाध थनत्रमस यध्वननसा मरुलि नाशसिय ॥ १६ ॥ नागकुनि
यत्र वयु यदा कंचिद्वचुर्थ रवनस्क ॥ गुन वद्वधुके दिवक यदा नदा धा
स्रमयाकि ॥ ० ॥ यमुलग्नया केन वधुधस आदित्य चदधनसा मरुमडासि

य ॥ रुहस्य गि वद्वधुके थनअनसा गुह वधुधस अनसा मरुडाधसिय ॥ १२ ॥
मयधनसिंघ स्वाक इदयास्क रुवेति ॥ दिवक वा मरुत्रिनरुगतदा रुहस
दिमा वा वायियका वा ॥ ० ॥ १ ॥ २ ॥ १६ ॥ २ ॥ थनयध्वनम्रधन वधु
थनयध्वनम्रधन मरुलि नाकासिय ॥ रुहस दिन रुत्रसां मरुलि नाकासिय ॥
२० ॥ सिलसा जे य मरु मरु धनि गुन यासि मा गदा मरुडदय न
विगुन वचित्रया मरु मदा गगनं ॥ ० ॥ २ ॥ १ ॥ ६ ॥ ११ ॥ थनले
गुरुन रुहस धनिध्वनया निडाशुत्रा मरुडाधसिय ॥ १ ॥ ७ ॥ १० ॥

१७० ॥ धर्मत्रयं दृढं नित्यं आदित्यं जनसां ह्युपशसिय ॥ २१ ॥ गृहसर्वं
 कर्मस्य आदि ॥ ० ॥ सर्वं गृहं वनं वक्रं कुरु यथा श्रुत्वा न तर्ह्यं गृहं जनसां वल्लभं
 गृहं या नाम संस्थासिय ॥ २२ ॥ च न तर्ह्यं गृहं कस्मिन् काले न
 न विनिर्दिष्टं न विनिर्दिष्टं गुह्यं न विनिर्दिष्टं न विनिर्दिष्टं न विनिर्दिष्टं ॥ ० ॥ द्वाया
 द्वाया गृहं यथा लक्षणं नित्यं श्रुत्वा कदापि न गृहं लक्षणं श्रुत्वा श्रुत्वा
 वयं नाम संस्थासिय ॥ यथा लक्षणं नित्यं श्रुत्वा कदापि न गृहं लक्षणं श्रुत्वा
 श्रुत्वा श्रुत्वा गृहं या नाम संस्थासिय ॥ थी न यादि गुह्यं याय दि स क व य

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ २३ ॥ जातु विलम्बं स्यादि ॥ ० ॥ लग्नधियनिधश्च नः लग्नया
 केन सक्रमं च त्रानं ॥ अथाज्जधियनिगुहधश्च नः ॥ धनिर्द्वैतकुरु प्रसाः गुनिर्द्वि
 लिला दृष्टासि य ॥ २४ ॥ उदयकायि वामं स्यादि ॥ ० ॥ यश्च लग्नधा अकुरु याव
 द्दुःखं न त्राता त्रानिया ध्वं न च नृधा यथादि नर्म स्यासि य ॥ २५ ॥ ॐ निघ
 टयं चासि कार्यांगमागमाध्यायदिनि य ॥ २६ ॥ ॐ ॥ देवमादयस कमल च समं
 नगधियस्य विजयं करिष्या ॥ अथाकिं ह्युच्यते ॥ यत्किं दौ विजय दानं वमं
 ॥ ० ॥ यश्च लग्नया केन दक्षम सक्रमं अष्टमसः क्षुरगुह द्रव तद्वत् शुक्रः

जाग्या

धनं गुरुं नमः नमः प्राविद्यमिथा रं गुं उय रुयि अनि श्रय ॥ नमः प्राविद्यमिथ
इत उ सं ह मिति रुय उ अं ग न व द ह द स्या मि धु क थ न ड न सा म ध म ॥
न ह नि ध न थ न न ड म ड स न सा रं ग ॥ न ड म स व द ह द स्या मि धु क थ न ड न
सा ये ड ॥ २४ ॥ यो प्रा क्त गो य रु व ना धिय स म ता लग न वा धु री न य न ४३
धु ना गा रु य द ह न च म म र क का न य व ॥ ० ॥ य ध लग या क न रू गो य न ध र्म
न गा स र्य व द गु न ह नि ध न थ न ड न सा धु र द सा यी धा न सा धा व ल य व व
थ र्व न न ड म स ड न वि स म धु र ग द न र्व न स नो य क रु ल स नो धु र ॥ लग या क

अ क डाय ग मा सो म्मा सो म्मा द ह न न ग्रा यो गि क य कि या या नि द या या रु क्रा वि य त्रि गं ॥ ०
न द ह म न का द ह द ह द ह या य ग द ड न सा अ ड या रं गु न ग ल या म रं गु मि य ॥ २५ ॥
न प्रा सि धा रु य द य धु र स यी या य स र्म रु व य द र व कि ॥ न द धु रं ध य व द न या नो
म यो द्धि द ह य ग मा वि त्रा र्ध ॥ ० ॥ न प्रा धि ॥ १ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११ ॥ थ न न ग रु य रु
ना य ध स धु र ग द ह द ह म न का द ह द ह थ न ध न स ड न सा संधि रु य ड नि श्र य ॥
या य ग द्धि स र अ प्रा सि स ड न सा वि ग द रु य ड मि य ॥ १ ॥ क ड ल य व रु ध
स फ स द ह म थ न क द स द ह स्या मि धु क य र्म उ ड नो स नो र्व न स ना वि य नि
ग र य र मि य ॥ २६ ॥ धि मि य द रू गो य वी रु न धु व द म द न अ ग रु मि य

यजुःशुलभासिर्हिगु ॥ यद्यल्लग्नयाकनदक्षमसंशुद्धगुरुप्रानिडाइत्राप्रानसांशुद्धन
सिया ॥ ३३ ॥ ॐ इदिसफदस्माद्यनिवृत्तिर्हि संशुद्धिगुणैरुक्तं लयमदाकृत् ॥ १ ॥
गु ॥ लग्नविधर्मसंगनधनमात्रयायाकार्यधनांशुवदाशुद्धाशुद्धासिद्धि ॥ ० ॥
द्विगियससकमसंशुद्धमनुकादक्षषष्टमरुगियधनधनसप्रानिडाइत्रावृद्ध
स्यगिडाचन्द्रानलग्नसखनिडाइत्रागुकार्यसंशुद्धलसिया ॥ लग्नरुगीयनय
मयंनमंषष्टमधनसयायगुदडानसावियनिगदलकार्यनासकनरुइयजनि
धननासवइयडाइत्रा ॥ धनधनसंशुद्धगुप्रानसा ॥ शुद्धलकार्यसिद्धि

रुयनिधय ॥ ३७ ॥ शुद्धगुरुसोमनित्रीकनाथविलग्नसकायनयंनमस ॥ विष
दसायनीक्षकनधंशुद्धवदवगनियीतितानी ॥ ० ॥ यद्वृद्धस्यगि शुद्धयर्षचन्द्र
धनगुदनखनिडाइत्रा ॥ सोमगुदलमसकमअष्टमयंनमधनधनसप्रानिडाइत्रा
प्रान ॥ रुगीयअष्टमनुकादक्षधनधनसचन्द्रडाइत्रा ॥ गगियाइत्रसाप्रामकि
ननानंदयिडा ॥ ३८ ॥ लग्नवेद्यादिनयाधिनमधिप्रागिकिभोधिधं ॥ नवंशुद्ध
शुद्धनामनयामवशुद्धाशुद्ध ॥ ०० ॥ ॐ गिषटयंवासिकार्याशुद्धाशुद्धीनाभा
धायचतुर्थ ॥ ॐ ॥ इलंगमस्यागमनंशुद्धधनसंशुद्धिभोयद ॥ लग्नसोम
नययाकि ॥ ॐ ॥ नैगुनसितायां ॥ आदिसंशुद्धयंनमदिहयरुगीयल

रुनीयः यत्र म. सफ. म. न. ड. म. ज. का. द. ध. थ. न. वा. न. स. ध. नि. ध. य. रा. न. सा. गु. वि. नी. या.
 य. र. न. मे. य. ॥ अथ वा पु. ध. ल. य. स. म. त्रा. सि. ला. ल. दि. नी. य. य. ल. थ. य. र. म. ज. स. म. य.
 ध. म. द्वा. द. ध. थ. न. थ. न. स. ड. न. सा. कं. न्या. ड. म. सि. य. ॥ ७६ ॥ गु. न. य. वि. सा. म्या. दि. क.
 वि. ध. न. द. नं. य. त्रि. ग. ४. धी. ल. म्म. न. ॥ रु. वं. नि. तु. वि. वा. द. क. का. वि. की. ल. क. द. य. व. सा.
 म. ॥ ० ॥ वृ. द्वा. सि. जि. जा. दि. य. वृ. द्वा. ध. न. गु. रु. क. म. ड. न. सा. वि. वा. द. रु. य. सि. य. ॥ क.
 य. न. य. म. यं. च. म. स. धु. रु. गु. द्वा. न. सा. वि. वा. दा. सि. दि. रु. य. सि. य. ॥ ७७ ॥ दि. द्वा. कं. य.
 स. क. म्म. सि. किं. सु. वि. वि. म. वा. य. थ. वा. वि. ल. म्म. न. ॥ दि. नी. य. वि. ध. क. ग. नं. रु. धा. वा. व. या. स.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

वि वि युवद्विलग्नम् ॥ ० ॥ आदित्यं चन्द्रं लग्नं च मन्त्रं तायां कनः कृताया कनः सय
मसंभुक् क्षान्तिश्च त्रयानसा वयोयोग्यं गसा इ यश्च नाया कनः द्वितीये रूपा यथ
निर्भरं गृह उः अनसा वर्षा इय ॥ ७८ ॥ सोमं जलं लासि स्थि रूपा यथ न के नु मासि
नयं कृत्तु वायु यदयं गतं जलं लासि स्थि वदं व त्रायी ॥ ० ॥ भु रूगृह उ त्र लासि स्थि
यात्र निधयं वर्षा लं ख अय अमिय ॥ विमं ख ज न लासि स्थि भु कृ य कृ या चन्द्र अन
सा वर्षा आयि अ निधय ॥ जलं त्रासि स्थि ॥ २ ॥ ७ ॥ न ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ क
मात्रिका वलं क्षान्तिश्च यद्वा क्षान्ति सूर्यं गु न यु स गा ॥ कृ कर्कसा सोमं क्षान्ति वध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

सर्वं वयं ॥ ० ॥ यश्च लग्नं चन्द्रं वदं न ख नसा क मात्रिका सय ॥ क्षान्तिश्च न आदित्य
न ख नसा रूद्रं क्षु मिय ॥ रूद्रं क्षु मितं ख नसा य स ग म् क्षु मिय ॥ जं ग न भु कृ न ख नसा क
र्क सा क्षु मिय थय या गि न क्षु या व क्षान्ति मिय ॥ ७९ ॥ आत्मा स मा लग्नं नै जा ना स
ह अस्थि नै क्षु ग स ग म मा गा रूद्रि क्षा गि न य य कृ थ ग १ न क्षु ग नै क्षु ॥ ० ॥ य
क्षलं य या क न थ क्षान्ति मिय स आ ग न य क्षु य क्षु म स य कृ थ स मा म गा ग ल
क रू या क रू या क न य क्षु म स क्षु य क न ॥ १० ॥ आत्मा स म स्यादि ॥ ० ॥ य
क्षलं य स आदि स्यादि नै ग रू अनसा सूर्यं त्रय मिय ॥ ० ॥ यश्च लग्नं स भु रू ग रू अ

प्राज्ञान (युद्धमं गीतं यो)

नसां रुसिय ॥ चडग्रह अनसा मरिं गुसिय ॥ रुमिय स अनसा रु या कि जा या क
न य क म स अनसा भा वा या क न ॥ १२ ॥ रा यो स क म सं ह्वा दि ॥ ० ॥
स क म म मी क न अन म स धर्म दे यु सिय ॥ १३ ॥ म स गु न रा वा र्य या क न ॥ १४
॥ च त ल ग्न त ल रा म म ध र ह य वा स चि का सिय न ॥ रु स क म रु व स न नि र्वा
य दि व डि या सा न ॥ ० ॥ य ध ल ग्न त ल ग्रा मि ला न य ध या क न न वा ध यं च म
लि ला य रु भ्रा य रा स चि का सिय ॥ य ध ल ग्न स क म स सं रा दि ला गु क ॥ १५
वान सा य व द वा सिय ॥ व रु स अन सा स्वा द वा सिय ॥ व रु अन सा वा सा च न्द अन

न
को म दि वि म रे प
श

स वा सा न नि ग्न अन सा अ स जा गि ॥ ० ॥ म थ रा दि ॥ ० ॥ य ध ल ग्न स
य च वा न सा वि सार वं पा य सं ह र्क रु न य व द न लो य हा य ल य ड ड सि
या अ रु म स न नि ग्न वा न व द न व नि अ रु न ॥ अ थ वा या व थ नि ड ड ग्रा दि
रु मिय ॥ ड का नै न यं अ य न्ध न यं सिय ॥ ड वे का न या अन मा न न दि न ड
मा स व धा य ल ग्न जा वि सिय स क रु ड ड व रु म रा दि ॥ ० ॥ य ध या क न क रु
य य म स रु रु अन सा ए रु का स रु व का य मि दि रु रु य दा सिय ॥ पा य अन
सा वि य वि ग रु न सिय रु न ॥ अं स का ड ड मी म्वा कि मी म्वा सा रु म ड ड ॥ सं ड ड
न सा ॥ हा द वा ग न ॥ रु वा वा यि ना न म्वा ॥ १६ ॥ ० ॥ नि य ट रं च मि का या स क

१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

१३ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ साकं स्रजं दत्वा च ह्यनयध्वमा ॥ ॥ धर्मेति
युष्मत्सु यस्मिन्नायां हिंसा हिंसा यगुत्रिंशो ॥ ० ॥ धर्मेति स्रजं दत्वा साकं स्रजं
मधुनमगुनिकावायकं ऊडाकं धनं ॥ १ ॥ द्वायां लोकं ध्वजं यकं युष्मद्गुनिका
कथासयाहं नानेधेदद्यात्तावदनमा धनं दद्यात्तावदनमा धनं दद्यात्तावदनमा धनं दद्यात्तावदनमा
वांगुवमुकं यथा कदाहा उय च्छंकाजं मनसा नयनं उगुनिं सिद्धयं धर्मं काजं
नयनं सी गंधं द्विभिरुयं उय कथं राजा उवं धरुयं गुगुत्रिंशं मां नानिया सनं ज
मिरी गी रुयं उय नाना नदनमा युताय सिद्धयं उय मनसा यागुत्रिका यं सिद्धं धनं य

महाप्रययागिर्युमंवनक मनयन नमोतिउयस कुर्याख ययायवडनसोसम
 संहिठकयूअथअकनदवतायासुदिजिदु चंयायखडनसांरिनइयअ गुनयाकावन
 याअडनदमात्रमअधथअदवना नयइथयुधुचंनसांसिद्धयअ॥ २ ॥दिदियसव
 नकवेगसइगसाहनकिनसुमडखन धर्मदस समसंधर्मायाखकनिथंथगुनिय
 सनअथंमाकनवडनसांइसंखममात्रचुयायडनसांभनयावडनसांइडनसां
 सिद्धइयसंददसमालयनयाधनमिधअषिमिदय संगानइमदडनसांयुधनं
 दयआगियाखडनसावदयावमुययंदुवदिगुवाअमिदयनिवमुइयंदुथगुवमु

क. पि धात्रादादायावा. ध्यादाव. ध्यादाव. निनुमयाग. आयाक. नध्याडा. दवात सदाय
हर्नन ऊवैय १०८ ॥ येय १०८ दध्याय. यध्याय. नदयकयज. यादा उत्रिवाहन
मगर्यइयाक. सगर्यइय. सिमगर्यइ. दानं आयाका नय. नय. नय. ४ इवान स. अय. धूमिन स.
॥ धूमिन नम. नम. विद्या धर्मदध्याय. अम. इय. ध्याय. याह. नन. धर्मन धन. धन. धन. धन.
इय. अ. नागि. इय. क. सि. म. सि. य. न. म. सि. य. म. य. आ. का. य. य. अ. न. या. न. क. अ. य. त्रि.
मि. ना. या. ध्या. के. ध्या. य. य. इ. य. ध्या. न. सा. रि. इ. इ. य. अ. ॥ ३ ॥ इ. ती. ये. ॥ इ. मा. न. द. व. ता. या.
क. ना. क. या. ह. ल. आ. द. ल. रा. अ. द. य. ना. आ. दि. मा. न. य. ध्या. य. ध्या. य. ध्या. य. ध्या. य. ध्या. य. ध्या. य.

[illegible]

ठ थू का. नागिया खठन सां नना नं नायडा. मि साया या थस इम इठन सां य उरु यडा. छ
संड य डरु या ठ न धां. नाग या. यी भा च या द र्व व नि वि र य ना य सा य य र्व स सा डाय
नाग य ग य थ या न क नायू ज ॐ भान स. व नि श्र य रु र्पि हें डा ने. धु द व ने क या या क
थ का. क ल द व का य डा या ठान. ध क ना धां रि ठ रू य ॥ १ ॥ न ड ग व क स क ड क
या ठ न ॥ व व न मान य या क द्वा काय ल ल क दा. ध क या म न दा द य रू न थ अ म न रि न
प र्व र्पि त म या. आ सि कं स रु न य ड ना. ध क वा ध य ड य म व. ज य व दि रु य म ड य ड म
य. आ सि ध म सि ध स सां सि ध म रु य या ख ठ न सां मि गु रू डा. ना गि रु य थ या सां न ज मी
म

ग रु या ड य या य. आ य. अ रि ध क काय. क या ख ठ न सां क न द व ना या इ यं ड. क न द व ना
यु आ रि न क या य. य र्व ग ग या डान रु स मि या न या ठा डान रु थ ड थि थि सि ठा डं द्वा पि
ध म व रु या ड ना क या द र्व थ या नि मि गि न. स दां रु न म न स. ग म अ दि क य. ज अ थ
रु ग पि न रु या य ना क धां गि. व स ध ना य डा. य कि षा डाल मान थ त्रि या ग सा प ध स
क तां रि ठ रू य डा ॥ ३ ॥ धु क सि रु या क रु क या रु ना. सि रु या त्रि सि या स म थि या ठ न
न नु. ज गि व न ना य डा. छ थ र्थ थ ड थ स थ ठ धां थ म वि ना न भ व म दू धां ग न ड न
धां ना गि इ वि रु य. यां रु य म दू क या म ठ न धां रि ठ जि ड या य ठ न सां म रु रु रु य ड म व

नागो इव नाना नाना यथा न ह वलु क नय अ नागिया इव रूति निया नागया धाव ना
गया गया धयाग क पोभा चया इव इ आधनय ना लेनय द नाय हांमि दया यजाया न क
यख डम व डन सां सुय धाद का क्रनं आ न ह दा फां ख व अ ॥ १ ॥ नरा यथा क इव
या रुव ॥ गुत्रि द हांम नदि न सां रु आ या ग सां रु सिद्ध अ न किन थया सां मि न आ काय
मात्र जि अया का प्रनं उ योष वि ऊ या या ध या ग के मदा व निविय न ड वे र थय धा कि
द डाय जा धा व निन ध रु न कि थ रुय इ विदि तिस क गि अ ति अ रुय इ धा व निया र
य न ग या य मा न व न ड डान सां द्या यि ड स्या रुय इ अ सं व या रुय इ थ गु त्रि य ध रु

य न सा अ न ड न ॥ ४ ॥ वना म ड क रा रु ल ॥ व ना रु मंद द म द न सां ध अ म न सा का
म रु ड य ध ध ड ड थं रु या रि न सां वान अदि क म द रु स रु न रु य रुय इ वि वा न य
य मा न रु रु या व ड न सा य या रुय इ धा ग या रुय इ थ या सां मि थ ड क न द व ना दि गु नि
य जा व लि वि य ध मि या न स ग ड वा ना गि रु न सां ना वि य अ म व मि य ड म व ध म न
जा य जा का र वि यु या ध या ग क मा न ना अ अ वि मा न या हा इ धा कि आ वा य वं द
रि रु श न या क सा जी अ या रुय म द या दान या व रिं जि अ म डि अ य ड न सां म डि अ
ध क थ क ना धा य थ गु नि य ध रु रु धां द थ डि ॥ ५ ॥ वन द नी या क रु क रा रु न

सुविश्रुयुगलदिनरुचक्रिनाथं योर्लं रात्र्यामुसिधं च यासमाचात्रिं हजिडा
याधंदा मद्रुसडाडादयुगलरुचक्रं श्रुयाइवहनसा रिमसनयादखं महं न
मिधयावकुतसयनाडाडादयवकुतत्रिगक्रियमात्रसंवधयायवज्ञ नसात्रगत्रम
ययायुषमयः शुनमनसहादावं नदिकदयुडाथयधममम ॥ १० ॥ मीमम इयथया
कशकयाहृताकृत्रनाहृयडाहृकिवाकायनायलायमात्रिडायिमाचयाइयः वधया
इयः श्रुयाइयः वयलियाहृयइसयः जगं द्यात्रहृयहृयइहृयमालसंनानदभाहृ
लयमइडायुगदगमांमथवाध्रं १ ध्रं न ध्रं इयिमाचनकायिडागुतरादअगलमि

वलिवियमालः महारगयात्रविय १३ ॥ यिगुहाकयागयिडधयमानमनसकाचगरा
युडायगुयाऊनदगमांनियरुः भाकिरिनकयायमानभाक्रियाहृयहृलनअथवायुग
मदगमांचेलध्रं ३ वरुनमिडायाथंयायिडाथयुध्राश्रुयांसगमांमरिहृ ॥ ११ ॥ नात्र
वृकमइहृकयाहृतासयुगभावावदुयद्विधृताथयुध्राइथववथं कायमवाइयडासगु
त्रिदभगाभृमुत्रिडयाधनिहृयिडाश्रुयात्रजककममिडिडाइननरुसडाडाविनय
यायातिकथंथथंथअविहासुवाहृकनविधमहनदययायिडाविवात्रदयकमात्र
गहृवकुतननिनत्रयडाजिडामडिअयायिडाभिगवंधइयडात्रागियात्रनांनयडा
यनजडानमांमदाहृयदयुडाथडाकृत्रदवगा०० वृधवगायुडायागमाहृनिरिहृ

[illegible]

अनद्वयं अमयं गच्छवन्मुक्तं नयः अमयं नागिना विपश्यन् मोक्षमयं कृपया खल्व्याग न इ
यत्वं दलितं अग्नि नया वन्मुक्तं सयिष्ठा नयः यदा अद्वयं च वन्मुक्तं कृपया नयमगच्छ
धुस्व इस्विया खल्व्यागं त्रिभुस्व इयं अहंता नया खल्व्यागं यदा अद्वयं अमिद्वयं अमिद्वयं खल्व्यागं
मदः यादा अद्वयं कयदा अद्वयं नागसया मीस्य नया यमा नययुधे मध्वम ॥ १४
॥ नया कनसज्जकया द्रव्याथ कनस नजिव ग्राय अमृद ददा चो जमना जानय
यायद्वयं अमयं धयुध उर्थं कृपया खल्व्यागं मल्लिंदनसा सवर्गा रिल्लिफ निन जय
नयद्वयं अमयं साना नया खल्व्यागं यदा अद्वयं सध्वमसि वया सिध्व
नागिना नना नायध मृद्वयं अमयं कृमि नद्वयं यासक स्यासदिषिद्वयं धयध्वम

कमलार्णवसारादि ॥ १५ ॥ अथ नमो नमो शक्याह न ॥ सकल नय जायाय नमः
उत्तम इत्यानीरिह तमुमा नरु न च न कामना सकलार्णव याम सक्तु लिन जायीयाय
मह सकलार्णव नमः यथा धन धाव सक्तु य धम्म याव मित्र याव गमन याव सक्तिह इत्या
खम कयाव सक्तिह तव रं धनं यत्नं नारुद यथा संगान याव पृथग् २ दय इव डक
रिमसन या विनिविय यजा याय भां गिव ड विदा निनया पाथ याय मित्र व ध इय
धय सक्तु यो रिह ॥ १६ ॥ अथ नमो नमो शक्याह न ॥ विस्व वरु न थ्य भुना नमः
लाक मय या कृ यान पृथक् अम याह लन जवि या इता धक जीनं नागनं पिभं न
नं भुना नमः मय या कृ या खं रिह मित्र वं ध धीमान या ख पृथग् ३ दय नाग
नमो नमः इय मय दय य जा या य मा न इय रिमसन या ना अ मीय या गो वन
नमो नमः इय मय दय य जा या य मा न इय रिमसन या ना अ मीय या गो वन

मय मय यत्र धु दव वडा न तम मय नमः नमः अथ नमो नमो शक्याह न ॥ अथ नमो नमो शक्याह न ॥
सिधय वृज अम याह लन गं अ धन इत नमः क न क न धन यत्र य या न व मी धं धि दम
भा न थ य धु यो रिह ॥ १७ ॥ अथ नमो नमो शक्याह न ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥
गुदि धाह मय नमः सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥
य मय नमः सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥
गुदं २ दय अ दिग नमः सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥
वामा ३ धु मित्र यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥
मुक यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥
धुडान गिनी नमि दय यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ मय मय सक्तु यो रिह ॥ १८ ॥ वन वड

सकयादल ॥ थडा आइ नसो भवया आइ नसो भिधयामय चनयादाया इसदयडा
मय इयडामइययां मइय गदवमुकमनडा असकनद इयंरु वादिइयंरु म
नय चुरवइडा दाइयंमनसइ प्रांगी रययथाक यदमथानसो प्रम प्रागिइय हाक
निनधनरु कियडा रयइ मथवाथथिथी याक इय थया भाकिरि इ दं ४ यडा
याय प्रउरै रयथाय चउवप्रिविय गथगनया डकि याथयाय विस डनयादाडाक
य चनसंगानदगसासियरयइ सादा यथमा प्रथयभ्र चं सांगभमसिठ ॥ १७
॥ श्रीगुमिमा असइकयाद ॥ गडाधद खसीहावात्रडाथी अगसमदगसांरुन
निय मसदयाडाथय आडादखिरुनसो नियमससिइय आडाथिने क्रमकय
निक

इनसो आसिवादयाद नव नहनमुखिरुयडामिगवधयाख यादानयाव सकनीकि
ठ प्रागिमइ इयडामय विसयथनक्र दगसांमा प्रानत्रय गदवमुकव नहनत्र
यइयंथअरु किडा अगकव गनदा प्रनसिके फ्र यिभ्र भावयादव चं सकनदइ
यु यिनथानसा लायमात्रिडा यिभ्र वयाभाकियायमा प्रवसिया रयइ सादा प्रया
यमात्र मरुनयित च्छायरुगसांरिठ थयभ्र ॥ २० ॥ चदुमासइकयाद ॥ शु
कयक्रवाधयइय कययडुदिनइय थयभ्र उथंरसनकु नयडा मकमिभ मन
मयडा निमत्रमधर्मयायडा कयासमभनया यिभ्र वयादव ॥ थयासाकि वनिवि
या गोत्रनगग आडाथिथीपी वनाग वडाडाडा गिरुमत्रगारं कउपउपउपउप